[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3584
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकार–साजन कुरियन मैथ्यू के चित्रों का रंग संयोजन

डॉ अनुराधा वारौलिया
सहायक प्राध्यापक,
राजा मानसिंह तोमर, संगीत एवं कला विष्वविद्यालय ग्वालियर

इस व्रम्हांण में हम अपनी ऑखों से जो भी देखते है। उनमें सबसे पहले रंग का प्रभाव पड़ता है। सृष्टी में अनेक प्रकार के रंग पाये जाते है, जिनमें से अधिकांष रंग ऐसे होते है। जिन्हें आम आदमी आसानी से पहचान सकता है जैसे लाल, पीला, नीला, हरा, बैंगनी, काला, लेकिन इनके अलावा कुछ रंग ऐसे पाये जाते है। जिन्हें आम आदमी आसानी से नहीं पहचान सकता, जिन रंगों को आसानी से नही पहचाना जा सकता है। उन रंगों को आम आदमी फूल, फल एवं सब्जीयों के नाम जानने की कोषिष करते है। अधिकतर ऐसा ग्रामीण क्षेत्र व्यक्तियों के साथ सूनने को मिलता है।

कुछ रंग ऐसे होते है। जो भ्रम उत्पन्न करते है। जिन्हें धूप छाया का रंग कहा जाता है। रंगो का अपना एक संसार, अपनी एक गरिमा, एवं अपना अस्तिव होता है। रंग विन बोले व्यक्ति के व्यक्तितव के बारे में सबकुछ बता देते है। रंग का अपना एक अलग स्थान है। किस रंग के साथ किस रंग का संयोजन किया जाऐ ये तो एक रंग विषेषज्ञ ही समझ सकता है। रंगों की सुन्दरता को और अधिक बढानें के लिए किस रंग के साथ जोडा जाए जिससे रंगों में और अधिक सुन्दरता आ जाऐ रंगों का आपस में तालमेल हो जाए तभी रंग सुन्दर कहलाते है। रंगों का तालमेल एवं उसका संयोजन ये सभी मुझे एक प्रसिद्ध चित्रकार साजन कुरियन मैथ्यू के चित्रों में देखने को मिलता है। रंगों के पारस्परिक संबंधों से सौन्दर्य की सृष्टि होती है। श्री मैथ्यू जी के चित्रों में रंग के माध्यम से रसों को दिखाया गया है।

" सृष्टि के प्रमुख तीन रंग माने गये है–

1) सत्य श्वेत 2) रजत–लाल 3) तमस् काला

काव्य शास्त्र में रसों के प्रतीक रंग माने गये है।

श्रंगार – श्याम	क्रोध – लाल
अदभुत – सुनहरापीला	करूण – भूरा
भय – काला	हास्य – श्वेत
वीर – गौर	वीभत्स – नीला
शान्त – श्वेत	आषा समृद्धि – हरा 1

श्री मैथ्यू जी के चित्रों में रसों एवं रंगों का बडा ही अद्भूत तालमेल देखने को मिलता है। उनके हर चित्र के रंग अपनी भाषा स्वयं ही वमा कर देते है। चित्रकार को चित्रों के बारे में बताने की कोई आवष्यकता नही होती उनके चित्रों में रंगों का जो संयोजन है। वो बडे ही खूबसूरत ठंग से किया गया है उनके चित्रों रंगों का संयोजन है जो दर्षक को अपनी और खीचता है। चित्रकार ने जिस भावना से चित्रों में रंग भरे है। वो रंग अपनी कहानी को स्वंय ही वया करते है। एवं भावनाओं को बिलक्षणता की मर्मज्ञता संचित ज्ञान की विष्लेषणात्मक निधि का समन्वय प्राप्त होता है वह अन्तरमन की एक अविस्मर्णीय पराकाण्ठा है। चित्रकार के चित्रों में रंगों की साधना से जो अपरमित समावेश, निषवासर, उनके प्रगतिपथ शषि भानु की तरह प्रथक, प्रथक परिवेष में ओज के साथ समरषता को रंगों की समावेष करने की छटा को दैदीत्यमान करने का अनूठा चित्रण है।

चित्रकार ने प्रतीकात्मक गौरवषाली कलाकृति को सम्मान एवं गौरव के साथ चित्रों में प्रत्येक रंग को इस प्रकार से सारगर्भित किया है। कि जिसकी अर्न्तमन से प्रत्येक कलाकार उनके अथक प्रयासों का अनुकरण करता रहेगा। भाषा मानव जीवन की सुद्रण विकसित अवधारणा होती है। वस उसी प्रकार से रंगों की अपनी एक भाषा होती जो चित्रकार के चित्रों में किये गये रंगों द्वारा दिखाए गये है। कला को कला के माध्यम से कला के लिए कत्तर्व्य भाव के साथ चित्रांकन को रंगों के माध्यम से दैदीव्यमान बना दिया है। जों साष्वत विचार धारा की आधार षिला है।

उनके चित्रों के रंगों प्रसून प्रतिभा चन्द्रोदयी रंग आकर्षण चितरंजित होकर औज भावनाओं के निरूपित है। कल्पनाए कल्पनाश्रोत होती है। जो गौरवषाली गति का रंगों के माध्यम से मनोहारी अंकेक्षण करती है। आषानुकुल भाव चक्षु उत्कंठा रंगों की आषातीत सफल लाक्षणिकता से रस रंग में अपनी कला के उद्गारों को सहज में समाज के चिन्तन के लिए नवीन बवचारों को सृजित कर कलाकार ने निरूपित किया है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकार ने " केवल मनोहर रंग संगति के ही माध्यम से कल्पना क्रीडन प्रदर्षित किया है। बल्कि उनके चित्रों में अवकाष की चिन्मयता का भी सहज साक्षात्कार द्रष्टव्य है। 2

"प्रभाव बाद के उत्तर काल में रंगों के सौन्दर्य को बढाने का जो कार्य विदुंवाद ने किया वाही कार्य धनवाद के उत्तरकाल में सुरीलवाद ने किया (3) उसी प्रकार कलाकार ने पिंक, रोजपिंक, ऑरेंज, ग्रीन, सेरोलीनव्लू, लीफ ग्रीन, केडमियम, यलो विरिडियम ग्रीन, काला रंग, इन सभी रंगों का प्रयोग बडी ही कुसलता से अपने चित्रों को रंगीकृत किया है।

"कलाकार का मानना है कि रंगों में भी जान है, वे भी सांस लेते है। वे हमसे बात भी करते है। इसी तारतम्य में रंगों के साथ आन्तरिक सुसंवादित्व अनुभव कर सर्वाग सुन्दर एवं प्रसन्नचित सृष्टि का सृजन किया है। इन चित्रों में रंगों का प्राचुर्य, माधुर्य और ऐष्वर्य परमोत्कर्ष पर प्रतिष्ठित जान पडता है। उन्होंने रंगों के स्वाभविक व निर्मल सौन्दर्य की रक्षा करते हुए तुलिका के नियन्त्रित चलनों द्वारा रंगों की छटाओं में पीरवर्तन करते हुए रचना सामर्थ्य से परिपूर्ण अपूर्व प्रेम सृष्टि रची है। (4)कलाकार ने अपनी भावना को रंगों के माध्यम से चित्रों द्वारा समाज तक पहुॅचाने का प्रयास किया है।

"रूप कला का सर्वस्व नही है। कला में रूप से अधिक रंग का महत्व है। कोई भी रूप केवल रंगीन क्षेत्र अथाव आकार में ही दिखाई देता है। बिना रंग के हम रूप को नही देख सकते है।(5)

चित्रकार के कुछ चित्रों के विषयों का मैने उल्लेख किया है।जिसमें ग्रे, पिंक, केडमियम, ऐसे काई दुर्लभ रंगों का बडे ही सुन्दर ढंग से चित्रों में संजोया है। जिनमें
SUSPENDEDFROM HEVEN OIL] SPROUT] CALLIGRAPHIC SPROKES] ENERGY
चित्रकार ने ऐसे सैकडों चित्र चित्रित किये है। जिनमें तेल चित्र, जल चित्र, ऐक्रलिक एवं अन्य विधाओं में चित्रकार ने रंगों को बडें ही सुन्दर ढंग से उपयोग किया है। चित्रकार जो भी रचता है रंगों के माध्यम से रचता है उसके रंग ही शब्द कोष होते है। वो इसी के माध्यम से संवाद करता है एवं अपनी भावनाओं को बिन बोले लोगों तक पहुॅचाने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची –

1 *कला के मूलभूत तत्व – लेखिका श्रीवास्तव डॉ अर्चना*
2 *प्रथम संस्करण वर्ष – 2010*
3 *मुद्रक शाही प्रिंटिग प्रेस (जबलपुर) 1*
4 *प्रष्ठ – 47*
5 *(कला सम्पदा एवं वैचारिकी) दिसम्वर 2006 मार्च पृष्ठ 12 पण 2*
6 *आधुनिक चित्रकला का इतिहास साखलकर र. वि. प्रकाषक राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर चौवीसवां संस्करण : 2013, पृष्ठ 215 3*
7 *(कला सम्पदा एवं वैचारिकी) दिसम्वर 2006 – 07*
8 *पृष्ठ – 12 4*
9 *कला सौन्दर्य और समीक्षाषास्त्र अषोक प्रकाषक संजय पब्लिकेषन – षष्ठम संस्करण – 2008 पृष्ठ – 151 5*
10 *भारतीय चित्रकला का इतिहास भाग – 1*
11 *अग्रवाल डॉ श्याम विहरी, प्रकाषक श्रीमती मीना अग्रवाल रूप षिल्प प्रकाषन इलाहवाद ,प्रथम संस्करणः 2000 प्रष्ठ – 37*